ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 10 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 02 जनवरी, 2023 से रविवार 08 जनवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

## गुजरात के माननीय राज्यपाल, आचार्य श्री देवव्रत जी के नेतृत्व में

# आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट

## महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती पर आयोजनों हेतु विशेष चर्चा

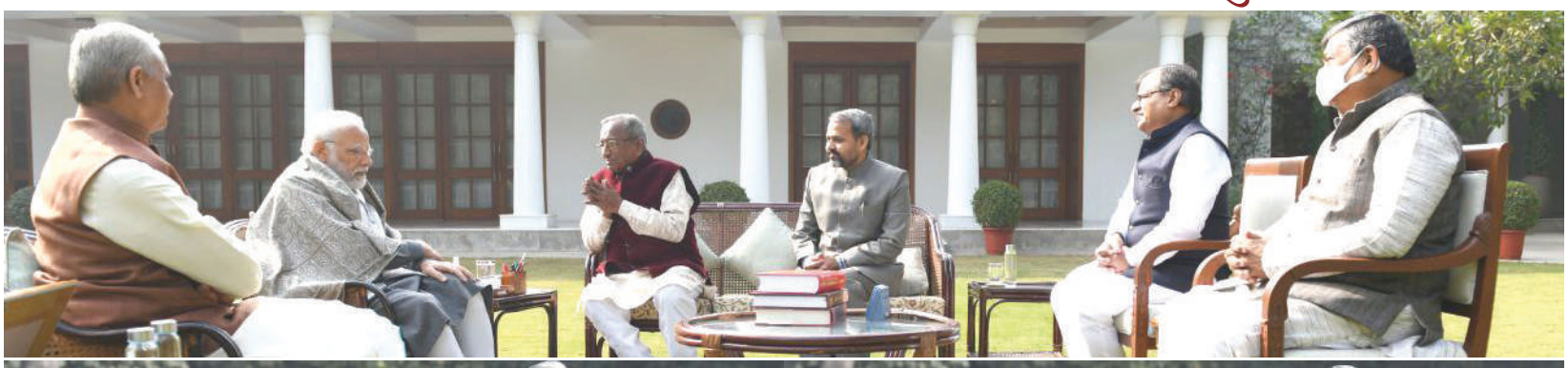

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200 वें जन्मदिवस के निमित्त गुजरात के महामहिम राज्यपाल, आचार्य श्री देवव्रत जी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट एवं चर्चा करते हुए सर्वश्री सुरेश चन्द्र आर्य, विनय आर्य, प्रकाश आर्य एवं डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से प्रधानमंत्री जी को पीत वस्त्र पहनाया गया तथा महर्षि दयानन्द का चित्र एवं स्मृति चिन्ह भी सम्मान पूर्वक भेंट किया गया।

ऋषि-मुनियों की जन्मदात्री भारत भूमि पर समय-समय पर अनेकानेक महापुरुषों ने जन्म लिया और संपूर्ण मानवजाति को कल्याण की राह दिखाई। इस बड़े अनुक्रम में यह सर्वविदित ही है कि 19 वीं शताब्दी में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 टंकारा, गुजरात में हुआ था। जिसको 12 फरवरी, 2024 को 200 वर्ष पूर्ण हो जाएंगे। महर्षि की 200 वीं जन्म जयंती को लेकर विश्व व्यापी आर्य समाज के विशाल संगठन में अत्यंत उमंग, उत्साह है। परिणाम स्वरूप इस महान अवसर पर 2023 में महर्षि के 199 वें जन्मदिन से ही महर्षि की 200 वें जन्मदिन के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजन बड़े स्तर पर प्रारंभ हो जाएंगे। इन्हीं आयोजनों की योजना को लेकर 31 दिसंबर 2022 को गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के नेतृत्व में आर्य समाज का प्रतिनिधि मंडल, जिसमें श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री विनय आर्य, श्री प्रकाश आर्य, डॉ राजेन्द्र विद्यालंकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट की। यह भेंट प्रधानमंत्री आवास,

- शेष पृष्ठ 8 पर

# आर्य समाज का प्रेरणा स्तम्भः आर्य दिवाकर सूरीनाम

## अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में प्रदान किया गया था विश्व का सबसे आकर्षक एवं दर्शनीय आर्य समाज

## अद्भुत और अनुपम है- आर्य दिवाकर सूरीनाम का भवन, इसकी विशालता और भव्यता को शब्दों में कहना कठिन -विनय आर्य

संपूर्ण विश्व में आर्य समाज का अपना आदर्श स्थान है। दक्षिण अमेरिका में सूरीनाम के पारामारिबो शहर में स्थित आर्य दिवाकर को देखने के लिए दूर दूर से आते हैं। वहां पर इस विशाल, विराट, भव्य आर्य समाज मंदिर को आर्य दिवाकर के नाम जाना जाता है और सूरीनाम का यह आदर्श आर्य समाज आर्य दिवाकर के नाम से ही विश्व में विख्यात है। आर्य दिवाकर सूरीनाम को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में विश्व की सबसे अधिक आकर्षक एवं दर्शनीय आर्य समाज का सम्मान प्रदान किया गया

था। अभी पिछले दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी गयाना में महर्षि दयानंद गुरुकुल के उदघाटन समारोह में गये थे, उसी दौरान उन्होंने आर्य दिवाकर सूरीनाम का भी भ्रमण किया।

आर्य दिवाकर की भव्यता और विशालता के विषय में विनय जी ने बताया आर्य दिवाकर सूरीनाम की इमारत को देखकर मुझे बहुत गौरव का अनुभव प्राप्त हुआ, इस सुन्दर और विशाल भवन को इतने योजनाबद्ध तरीके से बनाया गया है कि इसकी

- शेष पृष्ठ 4 पर

## वेदवाणी-संस्कृत

# हे इन्द्र

## वेद-स्वाध्याय

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम्।
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून्॥
-ऋक्. 4 । 19 । 6
ऋषिः-वामदेवः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-भुरिक्पङ्क्तिः॥

**शब्दार्थ**- **इन्द्र**=हे इन्द्र! **त्वम्**=तू **तुर्वीतये**=शत्रुओं का नाश करने वाले के लिए **वय्याय**=और दूसरों से प्राप्तव्य, वाञ्छनीय भक्त पुरुष के लिए **महीं अवनीम्**=इस महती पृथिवी को **विश्वधेनाम्**=सब-कुछ देने वाली, सब प्रकार से प्रीणन करने वाली और **क्षरन्तीम्**=अभीष्ट फलों को प्राप्त कराने वाली, उनसे पूरित करने वाली (बना देता है) तथा **एजत्**=बहुत उछलते हुए, तूफानी **अर्णः**=समुद्रजल को **नमसा**=अपने नमः द्वारा, वज्र द्वारा **अरमयः**=रममाण, शान्त कर देता है, एवं **सिन्धून्**=समुद्रों को **सुतरणान्**=सुगमता से तरने योग्य **अकृणोः**=कर देता है।

**विनय**- 'हे इन्द्र! तू उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता अपने-आप करता है।' इसलिए जो मनुष्य स्वयमेव अपनी विघ्न, बाधाओं को हटाने वाला, अपने मार्ग के शत्रुओं का विनाश करने वाला 'तुर्वीति' होता है, उसके लिए तू मार्ग साफ कर देता है, परन्तु ऐसा मनुष्य दूसरे से प्राप्तव्य, वाञ्छनीय, 'वय्य' भी अवश्य होता है। तेरा भक्त कभी केवल विनाश करने वाला घोर नहीं होता है, किन्तु दूसरों का सहारा, सौम्य भी अवश्य होता है। जो तेरा सच्चा भक्त है वह जहाँ मार्ग के राक्षसों, असुरों का संहार करने वाला होता है, वहाँ वह जनता की सेवा करने वाला, उनका आश्रय, प्रेमभाजन भी अवश्य होता है। ऐसे अपने सच्चे उत्कृष्ट भक्त के लिए, हे इन्द्र! तू कुछ उठा नहीं रखता है। इस 'तुर्वीति' और 'वय्य' पुरुष के लिए तू इन महान् पृथिवी को अभीष्ट फल दुहने वाली एक बड़ी गौ बना देता है और बड़े से बड़े समुद्रों को 'सुतरण' कर देता है। उसके मार्ग में चाहे स्थल आये या जल, तू किसी वस्तु को बाधक नहीं रहने देता। जब मनुष्य 'तुर्वीति' और 'वय्य' होकर तुझे पाने निकलता है, तेरे पन्थ का पथिक बनता है तो उसके राह में खड़ी हुई बड़ी से बड़ी पार्थिव बाधाओं को तू बाधाएँ नहीं होने देता, किन्तु अपनी कृपा से उन्हें सब-कुछ देने वाली, अपेक्षित आवश्यकताओं को पूरा करने वाली, विविध सहायताओं के रूप 'नमः' में बदल देता है। उसके मार्ग में पड़ने वाले बड़े से बड़े तूफानों समुद्रों को भी तू अपने 'नमः' द्वारा शान्त कर देता है। मानो क्रुद्ध से क्रुद्ध उत्तेजित समुद्रों को अपने 'नमः' नामक सबको नमाने वाले शान्ति वज्र द्वारा तू शान्त, रममाण, प्रसन्न कर देता है और तब उनके जल उस भक्त को डुबा देने की जगह उसे पार तराने में सहायक हो जाते हैं। यह सब, हे इन्द्र! तेरी महिमा है, तेरी अपने भक्तों के प्रति करुणा है। नहीं, मैं कहूँगा कि यह सब 'तुर्वीति' और 'वय्य' होने का सामर्थ्य है, तेरे ऐसे उत्कृष्ट भक्त बनने का माहात्म्य है।

निःसन्देह, हे इन्द्र! तुम हमें भी विपत्तियों के भारी से भारी पहाड़ों को लँघा दोगे, भयङ्कर से भयङ्कर समुद्रों को तरा दोगे, बस केवल हमारे 'तुर्वीति वय्य' बनने की देरी है, बस तुम्हारे ऐसे पूरे भक्त बनने की देरी है।

**-:साभार:- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक** प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

## संपादकीय

## तथाकथित ऑनलाइन ईश्वरभक्ति और भक्तों की समीक्षा

# ऑनलाइन है भगवान फिर भक्त क्यों है परेशान?

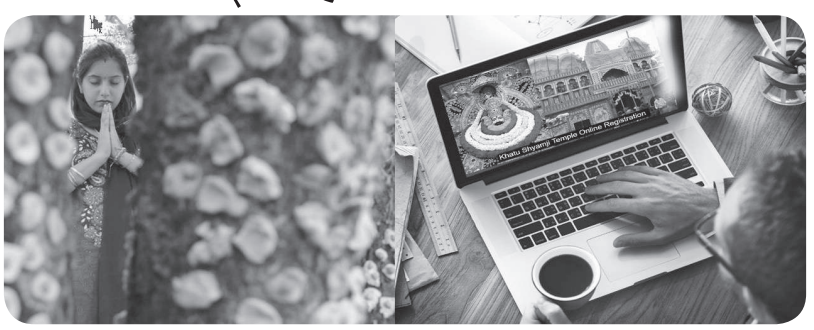


> ***"मनोकामना पूरी करनी हो, या किसी खुशी के मौके पर सत्यनारायण की कथा, हवन कराना हो, दीप यज्ञ या फिर अन्य धार्मिक अनुष्ठान करवाने की चाहत हो, तो अब पुजारी को घर बुलाने की जरूरत नहीं है, देश के सभी तीर्थ स्थान और अधिकतर पुजारी हाइटेक हो चुके हैं। विडियो कॉल से ही घर बैठे पूजा पाठ कराया जा रहा है। यजमान भी नेट बैंकिंग, गूगल पे, पेटीएम से पुजारी को दान दक्षिणा दे रहे हैं। पूजा पाठ कराने के साथ ही मंदिर का प्रसाद भी घर पहुँच रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं विडम्बना देखिये ज्योतिष विद्या के माध्यम से कुंडली या ग्रहों की चाल भी अब विडियो कॉल से ही बता रहे हैं, या कहो उनकी चाल बदल रहे हैं।***
>
> ***-संपादक***

जब भारत सहित सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध मत का इतना प्रभाव बढ़ चला था कि सनातन धर्म विलुप्त होने के कगार पर जाने लगा। तब प्राचीन भारतीय सनातन धर्म परम्परा और विकास के लिए आदि गुरु शंकराचार्य जी सामने आये और उन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया, शास्त्रार्थ किये और सनातन धर्म के विकास, उसकी प्रतिष्ठा के लिए भारत के चार कोनों में चार मठ स्थापित किये। ये मठ साधना के केंद्र बने, जिज्ञासा शांत करने की जगह बने और इन मठों की स्थापना करके आदि शंकराचार्य जी ने उन पर अपने चार प्रमुख शिष्यों को आसीन किया। तबसे ही इन चारों मठों में शंकराचार्य पद की परम्परा चली आ रही है।

यानि चार मठ, बारह ज्योतिर्लिंग इसके अलावा उत्तर से लेकर दक्षिण तक, पश्चिम से पूरब तक हिन्दुओं के अनेकों तीर्थस्थान, मंदिर, और देवस्थान हैं। लेकिन अब आगे ऑनलाइन की दुनिया में चलकर शायद यह आस्था के स्थान तो रहेंगे, लेकिन उनमें श्रद्धालु नजर ना आये, यानि मंदिर से लेकर मठ तक क्या आगे चलकर सब कुछ वीरान होने जा रहा है। क्योंकि दुनिया में सब कुछ ऑनलाइन हो चुका है, आप घर बैठे भगवान के दर्शन भी कर सकते हैं और मंदिर का प्रसाद भी मंगा सकते हैं। यानी सब कुछ ऑनलाइन उपलब्ध है। बस पैसा दीजिये सब कुछ घर बैठे हाजिर है प्रसाद भी और भगवान भी। बर्गर भी और पिज्जा भी।

यानि मनोकामना पूरी करनी हो, या किसी खुशी के मौके पर सत्यनारायण की कथा। हवन कराना हो, दीप यज्ञ या फिर अन्य धार्मिक अनुष्ठान करवाने की चाहत हो, तो अब पुजारी को घर बुलाने की जरूरत नहीं है, देश के सभी तीर्थ स्थान और अधिकतर पुजारी हाइटेक हो चुके हैं। विडियो कॉल से ही घर बैठे पूजा पाठ कराया जा रहा है। यजमान भी नेट बैंकिंग, गूगल पे, पेटीएम से पुजारी को दान दक्षिणा दे रहे हैं। पूजा पाठ कराने के साथ ही मंदिर का प्रसाद भी घर पहुँच रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं विडम्बना देखिये ज्योतिष विद्या के माध्यम से कुंडली या ग्रहों की चाल भी अब विडियो कॉल से ही बता रहे हैं, या कहो उनकी चाल बदल रहे हैं।

यह सुविधा तमिलनाडु सरकार के हिन्दू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग के अंतर्गत आने वाले 536 मंदिरों में उपलब्ध हो चुकी है। इसके अलावा माँ वैष्णो देवी ट्रस्ट से लेकर बालाजी से लेकर अनेकों बड़े मन्दिर और तीर्थस्थान भी अब ऑनलाइन आकर भगवान के दर्शन कराकर प्रसाद भेज रहे हैं। हालाँकि ये भी इतना आसान नहीं है, ऑनलाइन इसमें भी कूद गये। पिछले दिनों ऑनलाइन प्रसाद के ठगी के एक के बाद एक मामले सामने आये। इसमें वेंकटेश्वर के प्रसिद्ध प्रसाद तिरुपति के लड्डुओं को लेकर ठगी का मामला सामने सामने आया। दूसरा फर्जी तरीके से ऑनलाइन बिक रहा संकटमोचन मंदिर का प्रसाद में फर्जीवाड़ा भी दिखा, जहाँ 550 रुपए में सिर्फ एक पेड़ा भेजा गया था। इसमें वि श्वनाथ मंदिर के प्रसाद का भी फर्जीवाडा सामने आया था।

यानि हिन्दुओं ने तीर्थयात्री से ऑनलाइन यात्री तक का सफ़र तय कर लिया। असल में वैदिक काल में हमारी ऋषियों की जो परम्परा रही है वो जिज्ञासु परम्परा थी। उस दौरान जिज्ञासा प्रकट करने का समय भी मिलता था। मन की जिज्ञासा शांत करने लिए लोग गुफाओं में रहने वाले पर्वतों या वन इत्यादि में रहने वाले ऋषि-मुनियों के पास जाया करते थे। ऋषि मुनि भी वर्षाकाल आदि में नगरों में आकर धर्म का ज्ञान दिया करते थे। जिज्ञासा के केंद्र धीरे-धीरे मंदिरों में बदले, फिर पूजा अर्चना में उसके उपरांत मध्यकाल आते-आते अंधविश्वास और पाखंड ने जन्म ले लिया।

यानि जिस ईश्वर के दर्शन के लिए ध्यान साधना में जन्म बीत जाता था। आलसी लोगों ने उसकी प्रतिमा बना ली और बिना किसी ध्यान साधना के दर्शन का शार्टकट ईजाद कर लिया। ईश्वर की जगह महापुरुषों की त श्वीरें बना दी, प्रतिमाएं बना दी। दर्शन के लिए लम्बी-लम्बी लाइने लगने लगीं। लोगों के लिए भी यह ईश्वर दर्शन का सबसे सरल तरीका बन गया ना ध्यान ना साधना बस कुछ मुद्राएं पुजारी को दी और दर्शन कर लिए। आज वो लाइन ही ऑनलाइन में बदल गयी। जो ये भी नहीं कर सकते उनके लिए दूसरा उपाय भी है वो आजकल आप देख रहे होंगे यानि आज लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास ईश्वर की भक्ति के लिए भी समय नहीं है, अत: इसका भी जुगाड लगा दिया। इसे भी ऑनलाइन कर दिया। इसलिए कई लोग फेसबुक एवं व्हाट्सएप पर देवी देवताओं की फोटो डालते हैं और फ़िर लिखते हैं, क्या आपके पास 2 मिनट का समय है। दोस्तो, बाबा पर वि श्वास है तो दिल से कमेंट करो.. बाबा आपकी सारी मनोकामना पूरी करेंगे। कुछ अजीबोगरीब त श्वीर डालकर लिखते है इग्नोर मत करना आज शनिवार है, जल्दी लाइक करों शाम तक अच्छी ख़बर मिलेगी।

- शेष पृष्ठ 7 पर

## स्वास्थ्य संदेश

# 'मोतियाबिन्द' की वजह से अंधे हो जाते हैं लोग

### क्रमशः गतांक से आगे

**सुझाव–** आंख में कोई चीज धंसने पर, चोट लगने पर आतिशबाजी की कोई चिनगारी आंखों में चली जाने पर तुरन्त किसी न किसी नेत्र विशेषज्ञ से संपर्क करें।

* आंखों को किसी कारणवश रासायनिक चोट पहुंचती है तो ऐसे में आंखों को बिना हाथ धोए न छुए, नहीं जबरन खोलने की कोशिश करें।
* सुबह दांत साफ करने के बाद अपने मुंह में इतना पानी भर लें कि गालों को फूलने की वजह से दबाव महसूस हो। अब आप आंखों पर साफ पानी के छोटें मारे। कई बार छीटें मारने के बाद मुंह में भरे भरे पानी का कुल्ला कर दें। इस क्रिया को करने से आंख तो साफ होता ही है साथ ही आंखों की सही प्रकार से रक्त की आपूर्ति भी होती है।
* अगर आपको आंखों पर जोर पड़ने वाला कार्य करना पड़ता है तो आप आंखों का व्यायाम करें।

**'मोतियाबिन्द' का आयुर्वेदिक उपचारः-**

* महात्रिफला घृत 200 ग्राम लें इसे सुबह-शाम दूध के साथ एक-एक चम्मच की मात्रा में लें।
* सफेद प्याज का रस 10 मि.ली., नींबू का रस 10 मिली. अदरक का रस 10 मिली. शहद 50 मिली. की मात्रा में लेकर आपस में मिला लें। इसको नियमित रूप से 2-2 बूंद आंखों में डालने से 'मोतियाबिन्द' कट जाता है।
* किसी पत्थर पर कुचलकर एक आलू का रस निकाल लें। इस रस को आंख की पुतली पर लगाने से आंखों का धुंधलापन तो दूर होगा ही साथ ही साथ 'मोतियाबिन्द' भी कट जायेगा। इस क्रिया को तब तक लगातार करते रहना चाहिए, जब तक कि बिल्कुल साफ नजर न आने लगे।

***"अधिक उम्र हो जाने पर अक्सर लोगों को 'मोतियाबिन्द' नाम की आंखों की बीमारी हो जाती है। आंखों में इस रोग के प्रकोप से आंखों के देखने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक तरह से आज के संदर्भ में कहा जाए तो 'मोतियाबिन्द' अंधता का कारण है। बाकी कारणों में एजरिलेटेड मैक्यूलर डीजनरेशन, काला मोतिया (ग्लूकोमा), डायबिटीज, रैटिनोपैथी, माढ़ा, ट्रैकामा आंखों में लगी कई चोट या विटामिन (ए) की कमी है। आज हमारे देश में लगभग 50 प्रतिशत लोग 'मोतियाबिन्द' की वजह से अंधे हो जाते हैं। उल्लेखनीय है कि आनंदधाम आश्रम के 'करुणासिन्धु अस्पताल' के 'नेत्र विभाग में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा आंखों का सफल आपरेशन और चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था है। यहां आंखों का दान भी कर सकते हैं। मरने के पहले अपना 'नेत्रदान' करते जाइए, ताकि किसी की अंधेरी जिन्दगी को आप रोशनी से भर कर जाइए।"***

मनुष्य के शरीर में आंख एक महत्वपूर्ण संवेदनशील अंग है। इसकी अनदेखी करने पर कई बार बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है। इस लेख के माध्यम से हम पाठकों को आंखों की सुरक्षा के लिए सचेत करने का प्रयास किया गया है। सभी पाठकों से हमारा अनुरोध है कि आंखों की किसी भी प्रकार की बीमारी होने पर सुयोग्य चिकित्सकों से परामर्श लेकर ही उपचार कराएं।

## बाल बोध

# सफलता का रहस्य

### क्रमशः गतांक से आगे

मेरा टामी बेवकूफ नहीं है मैं उसे खुद पढाऊंगी और यही टामी बड़ा होकर महान् वैज्ञानिक थामस एडीसन बना। थामस ने सिर्फ तीन महीने स्कूल की पढ़ाई की थी।''

हेनरी फार्ड ने जो पहली कार बनाई थी उसमें रिवर्स प्रति डालना ही भूल गये थे। लोगों ने उनके इस उत्पादन के प्रति बड़ी निराशा प्रकट की। उन्होंने उत्साह नहीं खोया और आप आज जानते हैं कि हेनरी फोर्ड ने अपने उत्पादनों को किस मुकाम तक पहुंचाया।

बाह्य रूप से ऐसा लगता है कि सफल व्यक्तियों को कामयाबी भाग्य से मिली है पर उनकी संघर्ष की कहानी और असफलताओं में धैर्य की कथा से कम लोग ही परिचित होते हैं, वे हर बार गिरकर उठते हैं और ठोकरों से शिक्षा लेकर आगे बढ़ते हैं।

1914 में जब थामस एडीसन 67 वर्ष के थे तो उनकी फैक्टरी में आग लग गई। जिसमें लाखों डालर का सामान जलकर खाक हो गया। उस कम्पनी का बीमा बहुत कम था। एडीसन भी अब बूढे हो चुके थे और जीवन भर की मेहनत की कमाई अग्निसात होते देखकर बोले जो होता है, अच्छे के लिए होता है। हमारी सारी कमियां इसमें जलकर राख हो गई। ईश्वर की कृपा से हमें नए सिरे से कार्य करने के अवसर उपलब्ध हुए हैं। इतनी बड़ी हृदयविदारक घटना के सिर्फ तीन हफ्ते बाद ही उन्होंने फोनोग्राम का अविष्कार किया था।

जिन्दगी में असफलता उतनी ही स्वाभाविक और सहज है जैसे फूलों संग कांटे। वे कांटे भी पुष्पों के

***"सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है। असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रेरक लेख स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं।"***

सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं यदि हमारे पास देखने की दृष्टि हो तो दुःख में जो निराशा मिलती है, निरुत्साह मिलता है, उसी से युद्ध करना पड़ता है पुनः असफलता अपने में कोई चीज नहीं। हमें अपने हालातों के शिकार होने के बजाए ऊपर उठना चाहिए और हालातों पर विजय प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। जो आपको असफलता से सीख मिले उसे अपनी डायरी में नोट कर लें। उन्हीं सीखों के सहारे मंजिल का रास्ता खोजें। आज नहीं तो कल सफलता आपके कदमों में होगी।

# विचार करे देश युवा पीढ़ी, नववर्ष क्या, क्यों और कैसे?

काल का प्रवाह अनंत काल से अनवरत बहता आ रहा है। इसमें वर्ष, महीने, साल, दिन, घंटे, मिनट और सेकेंड की गणना मनुष्य को समय के सदुपयोग का ही संदेश देते हैं। क्योंकि मनुष्य का जीवन अनमोल है, मनुष्य के जीवन की उपयोगिता और सफलता समय के सदुपयोग में ही निहित है। अत: समय समय पर मनुष्य को यह विचार अवश्य करना चाहिए कि मेरा समय अर्थात जीवन के पल छिन किन कार्यों में व्यतीत हो रहे है, मैं अपने जीवन के अनमोल क्षणों को सृजन में लगा रहा हूं या विध्वंस में नष्ट कर रहा हूं। इस तरह के आत्मचिंतन और आत्मनिरीक्षण के लिए मनुष्य जीवन में कई महत्वपूर्ण अवसर बार बार आते हैं। उन अवसरों में मनुष्य का अपना जन्मदिन और नववर्ष विशेष वार्षिक पर्वों के रूप में आते हैं। इन प्रेरक बेलाओं में अगर व्यक्ति चिंतन मनन करे कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, मुझे जाना कहां है, मेरे जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य क्या है, मैं अपना समय, शक्ति किस दिशा में लगा रहा हूं, जीवन की यात्रा में मैं कितना आगे बढ़ पाया हूं, अब तक मुझे कहां तक पहुंचना चाहिए था, अगर मैं पीछे हूं तो उसके क्या कारण हैं, मेरा समय किन कार्यों में ज्यादा बर्बाद होता है, किन कार्यों के करने से मेरा जीवन सफल होगा, किन कार्यों से हानि होगी, मैं अपने शरीर की आरोग्यता के लिए कितना सजग हूं, मैं अपने परिवार की प्रसन्नता और देश की प्रतिष्ठा के विषय में कितना जागरूक हूं, मेरी संगति कैसी है, समाज के लिए मेरे क्या दायित्व हैं, अपने कर्तव्यों को लेकर मैं कितना लापरवाह हूं, आज के कार्यों को कल पर कितना और क्यों टालता हूं आदि आदि चिंतन करने से मनुष्य अपने जीवन के पथ पर अग्रसर होता है।

> *हमारा नववर्ष तो चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है, जब बसंत ऋतु में संपूर्ण प्रकृति दुल्हन सी सजी धजी होती, पेड़ पौधों पर नये नये हरे हरे पत्ते, धरती पर फैली हरी हरी घास, रंग बिरंगे खुशबू दार फूलों से महकता वातावरण, स्वच्छ आसमान, स्वच्छ नदियों के जल प्रवाह, न ज्यादा सर्दी और न गर्मी, मौसम में चारों तरफ उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियां, उसी बच्चों का नयी कक्षाओं में प्रवेश का आरंभ और नये वित्त वर्ष का आरंभ तभी होता है। सृष्टि संवत, विक्रमी संवत और अनेक ऐतिहासिक पर्व भी हमारे नववर्ष से जुड़े होते हैं, उस समय हम यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना आदि के नव संकल्प के साथ नववर्ष का स्वागत करते हैं। क्योंकि यही हमारा पर्व मनाने का नियम है, यही हमारे पूर्वजों की परंपरा है।*

लेकिन यह तभी संभव है जब मनुष्य निरंतर सजग होकर कार्य करें, अपने पूर्वज महापुरुषों के पदचिन्हों पर चले, अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को अपनाकर चले। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार नववर्ष 2023 का अवसर आया। यह सर्वविदित है कि पाश्चात्य नववर्ष है, इस नववर्ष पर किसी भी प्रकार की नवीनता नहीं होती, प्राकृतिक रूप से भी देखा जाए तो न पेड़ पौधों पर हरे पत्ते हैं, न ही रंग बिरंगे फूल हैं, न ही हरियाली है, सर्द हवाओं के थपेड़ो के बीच मनुष्य शारीरिक, मानसिक रूप से संकुचित है, लेकिन फिर भी लोग नववर्ष का स्वागत करने हिल स्टेशनों पर गये, होटलों में गये और नशों में डूबकर, बेहोशी की हालत में नाचते कूदते हुए नववर्ष का स्वागत किया। किंतु अनुमानत: इन नववर्ष मनाने वालों में से 5 प्रतिशत लोगों ने भी यह नहीं सोचा होगा कि वस्तुत: नववर्ष क्या है, क्यों है और इसे कैसे मनाएं?

पहली बात तो यह है कि यह हमारा नववर्ष ही नहीं है, हमारा नववर्ष तो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है, जब बसंत ऋतु में संपूर्ण प्रकृति दुल्हन सी सजी धजी होती, पेड़ पौधों पर नये नये हरे हरे पत्ते, धरती पर फैली हरी हरी घास, रंग बिरंगे खुशबू दार फूलों से महकता वातावरण, स्वच्छ आसमान, स्वच्छ नदियों के जल प्रवाह, न ज्यादा सर्दी और न गर्मी, मौसम में चारों तरफ उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियां, उसी बच्चों का नयी कक्षाओं में प्रवेश का आरंभ और नये वित्त वर्ष का आरंभ तभी होता है। सृष्टि संवत, विक्रमी संवत और अनेक ऐतिहासिक पर्व भी हमारे नववर्ष से जुड़े होते हैं, उस समय हम यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना आदि के नव संकल्प के साथ नववर्ष का स्वागत करते हैं। क्योंकि यही हमारा पर्व मनाने का नियम है, यही हमारे पूर्वजों की परंपरा है।

अंग्रेजी नववर्ष पर कुछ भी तो नया नहीं होता, जबकि हमारे वेदों में मनुष्य को संदेश दिया गया है कि प्रतिदिन एक नया जीवन है, एक नववर्ष के दिन ही नूतनता का अनुभव करना उचित नहीं है, हर पल हर क्षण में नवीन बने रहना है। इसके लिए क्या करें तो बताया गया कि हर दिन उमंग, उत्साह से सुबह का स्वागत करें, तरोताजा होकर जागें, शरीर की

- शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

## आर्य समाज का प्रेरणा स्तम्भ आर्य दिवाकर सूरीनाम

प्रशंसा के लिए किसी के पास भी शब्द कम पड़ जाएं। आर्य दिवाकर की भव्य यज्ञशाला, सत्संग भवन, स्वागत कक्ष, कार्यालय, अतिथिशाला और पूरा परिसर अपने आपमें अनुपम और अनूठा है। प्रत्येक आर्य समाजी को आर्य दिवाकर सूरीनाम में एकबार अवश्य जाना चाहिए। विनय आर्य जी ने अपनी सूरीनाम यात्रा को अविस्मरणीय बताते हुए कहा कि मैंने अपने आर्य महापुरुषों के तप, त्याग, सेवा, साधना पूर्ण जीवन और उनकी आदर्श संकल्पना को आर्य दिवाकर सूरीनाम के रूप में साक्षात देखा और अनुभव किया कि हमारे पूर्वज आर्य समाज को कितनी ऊंचाई तक ले जाने का

प्रयास करते थे। इस अवसर पर आपने सूरीनाम में आर्य अधिकारियों से चर्चा की और पाया कि वहां के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों के भीतर आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज के प्रति अत्यंत गहरी निष्ठा का भाव है, वे सभी आर्य समाज के सेवा कार्यों को लगातार आगे बढ़ाने में प्रयासरत हैं। वहां पर शिक्षण संस्थान के रूप में अनाथालय और अन्य सेवा कार्य भी गतिशील हैं। मैं आर्य दिवाकर सूरीनाम के सभी आर्यजनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं उन्होंने मुझे अपार स्नेह और सम्मान दिया।

## आर्य वीरांगना दल जम्मू कश्मीर: आठ दिवसीय संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा शिविर संपन्न

25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2023 तक वैदिक वानप्रस्थ आश्रम गढ़ी उधमपुर में आर्य वीरांगना दल जम्मू कश्मीर द्वारा आठ दिवसीय संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ।शिविर में यज्ञ, योग, ध्यान के साथ साथ 100 से अधिक कन्यायों को लाठी चलाना, बन्दूक

चलाना, तलवार चलाना, स्तूप बनाना, टाइल तोड़ना, जूडो कराटे आदि हृदय को रोमांचित करने वाले अभ्यास सिखाए गए। मन्त्राणी अर्पणा सेठी, उप मन्त्राणी मोनिका, कोषाध्यक्षा सीमा गुप्ता, मुख्य संरक्षिका प्रतिभा पुरंधि, संरक्षिका डा: अरुणा भगौत्रा, प्रचार मन्त्राणी रितु

- शेष पृष्ठ 7 पर

# गरीबों का सहारा बना सहयोग, सर्दी में गर्म कपड़े पाकर लोगों को मिली राहत

## दिल्ली एनसीआर में लगातार बढ़ती हुई सर्दी को देखते हुए सहयोग द्वारा वस्त्र वितरण में तेजी

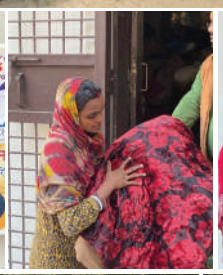

अभी पिछले दिनों समाचारों में बताया गया था कि दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में नैनीताल से भी अधिक सर्दी है। ऐसे में गर्म कपड़ों की सबको जरूरत होती है लेकिन जो गरीब हैं, उन लोगों के लिए, उनके बच्चों के लिए, बुजुर्गों के लिए गर्म कपड़ों का प्रबंध कहां से हो? ऐसी स्थिति में आर्य समाज द्वारा वस्त्र वितरण के लिए विख्यात सहयोग के माध्यम से सेवा बस्तियों में गर्म कपड़ों का वितरण के कार्यक्रम तेज किए गए हैं। जिससे मूलभूत जरूरतों को पूरी करने के लिए परेशान लोगों को राहत दी जा सके, छोटे बच्चे सर्दी से ठिठुरते, उनकी आंखों में बेबसी के आंसू और बीमार पड़ने का डर साफ दिखाई देता है, बुजुर्गों की हालत उनसे भी अधिक भयावह, सर्द हवाओं में कम कपड़ों में सिकुड़े हुए, कांपते हुए लाचार, मजबूर इन सभी लोगों को जैसे ही सहयोग द्वारा गर्म कंबल, ऊनी स्वेटर, जर्सी, कोट जैकेट आदि कपड़े दिए जाते हैं तो ये आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। सहयोग के वितरण करने वाले कार्यकर्ताओं को धन्यवाद करते हैं।

सहयोग द्वारा अभी पिछले दिसम्बर महीने में 16 दिसम्बर 2022 को पकिस्तान के शरणार्थी हिन्दुओं को सिग्नेचर ब्रिज कलोनी में गर्म वस्त्र वितरित किये गए। इस क्रम में आर्य समाज सूरजमल विहार और 22 दिसम्बर 2022 को डी.सी.एम. रेलवे कालोनी तथा रत्न देवी आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कृष्णा नगर आदि विभिन्न स्थानों पर वस्त्र वितरण कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। इन सभी वस्त्र प्राप्त करने वालों में हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुष और बच्चे लाभान्वित हुए।

## आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2079-80 तद्नुसार सन् 2023

| क्र.सं. | | पर्व का नाम | चन्द्र तिथि | अंग्रेजी दिनांक | दिवस |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | | लोहड़ी | माघ कृष्ण, 7 वि. 2079 | 14/01/2023 | शनिवार |
| 2. | | मकर-संक्रान्ति | माघ कृष्ण, 8 वि. 2079 | 15/01/2023 | रविवार |
| 3. | | गणतन्त्र दिवस | माघ शुक्ल, 5 वि. 2079 | 26/01/2023 | बृहस्पतिवार |
| 4. | | बसन्त-पंचमी | माघ शुक्ल, 5 वि. 2079 | 26/01/2023 | बृहस्पतिवार |
| 5. | | सीताष्टमी | फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2079 | 14/02/2023 | मंगलवार |
| 6. | ऋषि-पर्व | महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव | फाल्गुन कृष्ण, 10 वि. 2079 | 15/02/2023 | बुधवार |
| 7. | ज्योति-पर्व | शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव) | फाल्गुन कृष्ण, 14 वि. 2079 | 18/02/2023 | शनिवार |
| 8. | वीर-पर्व | पं. लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया) | फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2079 | 22/02/2023 | बुधवार |
| 9. | मिलन-पर्व | नवसस्येष्टि (होली) | फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2079 | 07/03/2023 | मंगलवार |
| 10. | | आर्य समाज स्थापना दिवस/चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/चैती चांद | चैत्र शुक्ल, प्रतिपदा वि. 2080 | 22/03/2023 | बुधवार |
| 11. | | रामनवमी | चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2080 | 30/03/2023 | बृहस्पतिवार |
| 12. | | वैशाखी | चैत्र शुक्ल, 13 वि. 2080 | 14/04/2023 | मंगलवार |
| 13. | | पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस | चैत्र पूर्णिमा, वि. 2080 | 26/04/2023 | बृहस्पतिवार |
| 14. | | विश्व पर्यावरण दिवस | आषाढ़ कृष्ण, 1 वि. 2080 | 05/06/2023 | सोमवार |
| 15. | | विश्व योग दिवस | आषाढ शुक्ल, 3 वि. 2080 | 21/06/2023 | बुधवार |
| 16. | | स्वतन्त्रता दिवस | श्रावण कृष्ण, 14 वि. 2080 | 15/08/2023 | मंगलवार |
| 17. | | हरितृतीया (हरियाली तीज) | श्रावण शुक्ल, 3 वि. 2080 | 19/08/2023 | शनिवार |
| 18. | वेद-प्रचार | श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन | श्रावण पूर्णिमा, वि. 2080 | 30/08/2023 | बुधवार |
| | समारोह | हैदराबाद सत्याग्रह दिवस | श्रावण पूर्णिमा, वि. 2080 | 30/08/2023 | बुधवार |
| 19. | | श्री कृष्णजन्माष्टमी | भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2080 | 07/09/2023 | बुधवार |
| 20. | | स्वामी विरजानन्द दण्डी स्मृति दिवस | आश्विन अमावस्या, वि. 2080 | 14/09/2023 | बृहस्पतिवार |
| 21. | | गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती | आश्विन कृष्ण, 3 वि. 2080 | 02/10/2023 | सोमवार |
| 22. | | विजया दशमी/दशहरा | आश्विन शुक्ल, 10 वि. 2080 | 24/10/2023 | मंगलवार |
| 23. | | स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस | आश्विन शुक्ल, 12 वि. 2080 | 26/10/2023 | बृहस्पतिवार |
| 24. | क्षमा-पर्व | दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव) | कार्तिक अमावस्या, वि. 2080 | 12/11/2023 | रविवार |
| 25. | बलिदान-पर्व | स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस | मार्गशीर्ष शुक्ल 11 वि. 2080 | 23/12/2023 | शनिवार |

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

**Continuing the last issue**

# What the Vedas Stand for

The Vedas advocate two modes of worshipping (glorifying, praying and Meditating) the Divinity, viz., Sandhya or devotional meditation, which is individualistic, and Havan or or fire-ritual, which is congregational devotional prayer along with purification of atmosphere by offering oblations of Ghee or clarified butter and Samagri or mechanical mixture of' me dicinal herbs, securing hygienic conditions for one and all. The Vedas sanction no third way of worship.

(2) God, Soul and Matter and Creation

Then again, as already mentioned passingly, the Vedas hold God, soul and primordial matter as the three coeternals, leading to the creation and dissolution of the universe in all its phases in a cyclic order one after the other from eternity to eternity. Primary matter is the material cause of the world. Each atom of matter consists of proton (nucleus) and electron (revolving right round proton). When the two are not working, the atom is said to be inactive or causal, but when they are in a state of proto-electronic movement, it is active, effectual or secondary. It is in this state that atoms juxtapose and, through natural processes of cohesion and diffusim, result into bodily forms. Combination or assignment of souls, countless (relatively) in number, with or to such perfectly designed bodies brings about all beings including mankind.

The Vedas state further that the advent of a soul in a body is according to its deed in a human existence in a cyclic order of birth and death, having no mathematical beginning or end. They also say precisely that soul enters into a body through the foodgrain consumed, which, inter alia, results in semen virile, every particle of which has active, living germes fertilising on an ovum in a womb. It's also made clear in the Vedas that the proto-electronic movement is set up by the Divine Being in the beginning of every cycle of creation, which lasts for the period of creation, exhausting itself out in the usual course, when the state of dissolution sets in. For the period of creation, as Swami Dayanand has put it towards the end of the Light of Truth (Doctrine NO. 1), 'Substanes, properties and characteristics, which result from combination, cease to exist on the dissolution of that compound. But the power or force, by virtue of which one substance unites with the other or separates from it, is inherent in that substance, and this power will compel it to seek similar unions aud dissolutions in future'. Thus, matter is constantly in a state of flux, never being ultimately destoryed. Modern geologists and zoologists, also, state that the power, with which the activity of the creation has been set into motion, when would naturally exhanst itself out, that would be the end of the creation.

The Rigved-10. 190. 1-3, 10. 90. 1-16; the Yajurved-31.1-20, 39. 6, 40. 15; the Samaved-1. 6 (3). 4.3-7; and the Atharvavcd —19. 6. 1-6 propound this subject fairly well.

Soul is independent to act, but dependent on the Divinity for the results of actions. God and soul are related to each other as pervader and the pervaded, and as such, they are inseparable from each other. According to the Vedas, soul is the ego of body, and God is the ego of the universe. The purpose of creation is the exercise of the natural creative power of the Divinity and providing opportunity or opportunities for the individval souls to work their way up to their salvation.

*To be continued in next issue*

पृष्ठ 4 का शेष

## विचार करे देश युवा पीढ़ी, नववर्ष क्या, क्यों और कैसे?

आरोग्यता के लिए नियमित व्यायाम, प्रणायाम करें, मानसिक रूप से स्वस्थ और संतुलित रहने के लिए योगासन और ध्यान करें, ईश्वर की उपासना करें, अपने कर्तव्यों का सहर्ष पालन करें, अपने बड़ों का सम्मान करें और छोटो को प्यार करें, नियम अनुशासन और व्यवस्था को अपनाकर चलें, सोने, जागने, उठने, बैठने, खाने, पीने और बोलने चालने तक का ध्यान रखें। इस तरह से जागरूक होकर आचरण व्यवहार करने से तो हमारा हर दिन नया वर्ष हो जाएगा और हम उन्नति प्रगति और सफलता के पथ पर आगे बढ़ते जाएंगे।

ऋग्वेद के नोवे मंडल के नौवें सूक्त का आठवां मंत्र नवीनता का संदेश देते हुए कह रहा है

**''नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः। प्रत्नवद्रोचया रुचः॥''**

वेद भगवान का संदेश है कि हे मनुष्य, तू नित्य नए और अधिक नए मार्गों का निर्माण कर, नया काव्य, नया संगीत और नए विचारों से अपने जीवन को ऐसे नवीन बना जैसे तुझसे पूर्व तेरे पूर्वज विद्वान लोग बनाते आए हैं। मनुष्य का संपूर्ण अस्तित्व, उसके आयास प्रयास, प्रयत्न, शिक्षा, दीक्षा आदि समस्त क्रियाकलाप नवीनता में ही समाहित हैं और प्रत्येक नव वर्ष भी उसी कड़ी का एक पावन उपक्रम है। मंत्र का प्रथम चरण यही कह रहा है कि हे मनुष्य तू नूतन नवीन होकर नित्य नए नए मार्गों का निर्माण कर। जैसे किसी अधखिली सुमन की कली के ऊपर ओस की बूंद और सूर्य की किरणें पड़ती हैं, उसमें ताजगी के रंग भर देती हैं, उसे नूतन नवीन बना देती हैं, वैसे ही मनुष्य को सदैव अपने जीवन में नवीनता को धारण करना चाहिए, जीवन में नवीनता के लिए हर पल अपने मन को नया बनाए रखें, पुराने, बासी, उदासी, निराशा के विचारों को हटाइए और नई खोज करिए, नई सोच रखिए, नई सकारात्मक सोच से ही जीवन में नए परिवर्तन आते हैं, नया चिंतन करें, नया मनन करें, प्रतिदिन नई कल्याणकारी वैदिक प्रार्थनाओं, आज्ञाओं का स्वाध्याय करें, उमंग, उत्साह से भरे रहे, नया पुरुषार्थ करें, नया परिश्रम करें, नया बोलें, नया करें और नया जीवन में मधुर रस घोलें, इसके लिए प्रकृति के बीच बैठना चाहिए, हंसना गुनगुनाना चाहिए, दूसरे के सदगुणों की प्रशंसा करनी चाहिए, ऐसा करने से हमारे जीवन में नवीनता आएगी, हमें हमेशा ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, खुश रहने की आदत बनानी चाहिए, बड़ी खुशी की प्रतीक्षा में नहीं रहना चाहिए, जो काम बन गए हैं, जो मिल गया है, पहले उसकी खुशी मनाएं, फिर आगे के लिए प्रयास करें। शिकायती नहीं बनना चाहिए, भगवान के प्रति धन्यवाद करते हुए अपने जीवन के हर पल को खुशी से बिताना चाहिए। तभी जीवन में नवीनता आती है और हमारा नववर्ष मनाना सार्थक होता है।

**-आचार्य अनिल शास्त्री**

## आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

### लक्षण-प्रमेय-प्रत्यक्ष-अनुमान

**84-लक्षण**

जो गुण स्वाभाविक करे
लक्ष्य वस्तु का ज्ञान ।
ज्यों कि रूप से अग्नि का
'लक्षण' वह पहिचान ।।105।।

**85-प्रमेय**

जो इन्द्रिय-प्रमाण से
सम्यक् होता ज्ञात ।
ज्यों लोचन से रूप ही है,
'प्रमेय' विख्यात ।।106।।

**86-प्रत्यक्ष**

जो शब्दादि पदार्थ का
इन्द्रिय, मन के साथ ।
श्रोत्रादिक से ज्ञात हो वह
'प्रत्यक्ष' सुपास ।।107।।

**87-अनुमान**

पूर्व दृष्टि हो वस्तु के
एक अंग का ज्ञान ।
पीछे अंगी ज्ञात हो जिससे
वह 'अनुमान' ।।108।।

**साभार :**

**सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से**

**प्रेरक प्रसंग**

## मनुष्यों को खाने को नहीं मिलता

यह युग ज्ञान तथा जनसंख्या के विस्फोट का युग है। कोई भी समस्या हो जनसंख्या की दुहाई देकर राजनेता टालमटोल कर देते हैं।

1967 ई. में गो-रक्षा के लिए सत्याग्रह चला। यह एक कटु सत्य है कि इस सत्याग्रह को कुछ कुर्सी भक्तों ने अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिए प्रयुक्त किया। उन दिनों हमारे कालेज के एक प्राध्यापक ने अपने एक सहकारी प्राध्यापक से कहा कि मनुष्यों को तो खाने को नहीं मिलता, पशुओं का क्या करें?

1968 में, मैं केरल की प्रचार यात्रा पर गया तो महाराष्ट्र व मैसूर से भी होता गया। गुंजोटी औराद में मुझे भी कहा गया कि इधर गुरुकुल कांगड़ी के एक पुराने स्नातक भी यही प्रचार करते हैं। मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने को कहा गया। जो उत्तर मैंने अपने प्राध्यापक बन्धु को दिया था वही उत्तर महाराष्ट्र में दिया।

मनुष्यों की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है यह एक सत्य है, जिसे हम मानते हैं। मनुष्य के लिए कुछ पैदा करोगे तो ईश्वर मूक पशुओं के लिए तो उससे भी पहले पैदा करता है। गेहूँ पैदा करो अथवा मक्की अथवा चावल, आप गन्ना की कृषि करें या चने की या बाजरा, जवारी की, पृथिवी से जब बीज पैदा होगा तो पौधे का वह भाग पहले उगेगा जो पशुओं ने खाना है। मनुष्य के लिए दाना तो बहुत समय के पश्चात् पककर तैयार होता है।

वैसे भी स्मरण रखो कि मांस एक उत्तेजक भोजन है। मांस खाने वाले अधिक खाते हैं। अन्न की समस्या इन्हीं की उत्पन्न की हुई है। घी, दूध, दही आदि का सेवन करने वाले रोटी बहुत कम खाते हैं। मक्खन निकली छाछ का प्रयोग करने वाला भी अन्न थोड़ा खाता है। इस वैज्ञानिक तथ्य से सब सुपरिचित हैं, अतः मनुष्यों के खाने की समस्या की आड़ में पशु की हत्या के कुकृत्य का पक्ष लेना दुराग्रह ही तो है।

**-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु**

**साभार :**

**तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी**

**तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 2 का शेष

## ऑनलाइन है भगवान फिर भक्त क्यों है परेशान?

लोग लाइक करते हैं, शेयर करते हैं या कहो उनकी भक्ति साधना यहीं तक सिमित हो चुकी है। वो एक तश्वीर को लाइक करके खुद को भगवान का भक्त समझ रहे हैं। यानि जो भी हो रहा है आगे इसके धार्मिक नुकसान क्या होंगे! आने वाली सनातन धर्म की नस्ल अपने धर्म के लिए कितनी जागरूक होगी और ई श्वर सच में फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप पर ऑनलाइन हैं ऐसे कई सवाल पैदा हो रहे हैं?

जो लोग आज 2023 में भगवान को ऑनलाइन बता रहे हैं तो शायद वो जानते होंगे कि ईश्वर आदिकाल से ही ऑनलाइन है। ऋषि-महर्षि ध्यान, साधना के बल पर दर्शन कर लिया करते थे। अगर पैसे के दम पर ही दर्शन होते तो ना जाने कितने राजा-महाराजा राजपाट त्याग करके वनों में चले गये, ध्यान साधना में लीन हो गये। सिर्फ ईश्वर के दर्शन के लिए। मन की जिज्ञासा शांत करते थे। अगर ईश्वर के दर्शन पैसे के द्वारा होते तो क्या उनके पास धन दौलत की कमी थी? वो जानते थे कि ईश्वर के दर्शन के लिए मन के तार या कहो आस्था के तार ई श्वर की स्तुति से प्रार्थना से जोड़ने पड़ते हैं ना कि प्रसाद मंगाकर या फोटो प्रतिमा निहारकर।

किन्तु ऑनलाइन की दुनिया में ऐसा कुछ नहीं है। आपको जो देवता पसंद है। जो मंदिर पसंद है उनके लिए क्रेडिट कार्ड से भुगतान कर ऑनलाइन पूजा कराई जा रही है। महाकाल हो या तिरुपति आप पंजीकरण कराइए... ऑनलाइन भुगतान करिए... आप की ओर से उन मंदिरों में पूजा करा दी जाएगी। यानि पंजीकरण करवाइए और आपके नाम की डुबकी प्रयाग में या कुंभ मेले में लगवा दी जाएगी! जरा सोचिए... हमारे नाम से कोई दूसरा व्यक्ति पूजा कर रहा हैं। कोई दूसरा व्यक्ति डुबकी लगा रहा है तो उसका पुण्य हमें कैसे मिलेगा?

यह तो ये ही बात हुई कि कोई हमारा नाम लेकर अपना मोबाइल चार्जिंग पर लगाए और हम सोचे की हमारा मोबाइल चार्ज हो जाएगा! या कोई शक्कर...शक्कर...शक्कर... रटे और मुंह हमारा मिठा हो जाये! क्या ऐसा हो सकता है! आखिर सर्वशक्तिमान ईश्वर इतनी सरलता से कैसे आशीर्वाद देंगे?

इस कारण ऑनलाइन वाले भक्तों को समझना होगा कि ई श्वर एस.एम. एस. नहीं स्मरण से मिलते हैं। अगर आज के बच्चें इस ऑनलाइन की दुनिया में उलझ गये तो कल सनातन धर्म का क्या होगा? आप सोच सकते हैं, ये मंदिर ये तीर्थस्थान होंगे या नहीं लेकिन ये जरुर है कि ये ऑनलाइन बाजार वाले किसी दूसरे मत का दर्शन करा रहे होंगे। कहीं ऑनलाइन दर्शन के चक्कर में ना ये धर्म बचे, न यह मठ और ना ये बारह ज्योतिर्लिंग। **-संपादक**

## संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा शिविर संपन्न

शास्त्री एवं मन्त्राणी स्त्री समाज सुनीता गुप्ता शामिल रहे। आर्य वीरांगनाओं को अध्यात्मिक एवं व्यवहारिक ज्ञान देने हेतु आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य जीन्द हरियाणा से पधारे तथा संस्कार एवं आत्म सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु दिल्ली से पधारे आचार्य सत्यम जी एवं अभिलाषा जी का विशेष योगदान रहा। इस शिविर का मुख्यत: संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान अरुण चौधरी जी के नेतृत्व में हुआ। इस शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती सोनिया गुप्ता प्रिंसिपल सेशन जज जम्मू कश्मीर द्वारा की गई।

## प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पूजनीया माता हीरा बा जी का निधन

भारत राष्ट्र के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की पूजनीया माता हीरा बा जी का 30 दिसम्बर 2022 को 100 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सादगी व सम्मान के साथ गांधी नगर में सम्पन्न हुआ। पूज्या माता हीरा बा जी ने कठिन और विपरित परिस्थियों में त्याग, तपस्या और साधनापूर्ण जीवन जीते हुए सम्पूर्ण नारी जाति के लिए कर्मशीलता का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनका मधुर, सौम्य स्वभाव सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अनुकरणीय है।

## वैदिक सूक्तियां

**5- आफिस-व्यवसायिक उद्यानं ही ते पुरुष नवायानम**
-अथर्व 08-01-06
(उद्यमी पुरुष ही सारे संसाधनों को प्राप्त करता है।)

**6- सार्वजनिक स्थान-पार्क सर्वे भद्राणि पश्यन्तु** -नीति वचन
(सभी अच्छा देंखे।)

**7- व्यायाम शालाओं में शरीर माध्यम खलु धर्म साधनं**
-कुमार संभवं
(शरीर ही सारे धर्म-कर्म का साधन है।)

**8- भोजनशाला में केवलाघो भवति केवलादी**
-ऋग्वेद -10-117-06
(अकेला खाने वाला पाप को खाता है।)

**आर्य समाज मन्दिर खजूरी खास** द्वारा 11 से 15 जनवरी 2023 तक दसवां वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।
**-रामानन्द आर्य, मंत्री**


## आर्य सन्देश

**क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?**

**क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?**

**क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?**

**क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?**

**क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?**

**यदि हां! तो**

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक


## आर्य समाज नारायणा विहार द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस संपन्न

23 दिसंबर 2022 को स्वामी श्रद्धानंद के 96 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज नारायणा विहार द्वारा 6 बजे से 8 बजे तक यज्ञ, भजन संध्या करके मनाया गया। आर्य समाज के धर्माचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में महामंत्री श्री रविन्द्र गर्ग जी परिवार सहित यजमान बने, भजनों की प्रस्तुति श्रीमती तारा शर्मा, आचार्य जी की सुपुत्री सुप्रिया शर्मा और आचार्य जी ने स्वयं सारगर्भित और प्रेरक भजन प्रस्तुत किए। स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रति सभा अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।
**-कर्ण सिंह तंवर, प्रधान**

## शोक समाचार

### श्री दयानन्द आर्य जी का निधन

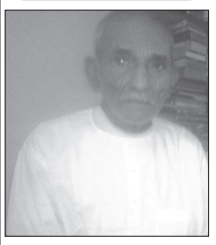

आर्य समाज बी. ब्लाक जनकपुरी के धर्माचार्य श्री योगेन्द्र शास्त्री जी के पूज्य पिताजी श्री दयानन्द आर्य जी का 28 दिसम्बर 2022 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार गांव गल्हैता, बागपत में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा, शान्ति यज्ञ 8 जनवरी 2023 को गल्हैता, बागपत में होगी।

### श्री सूरज प्रकाश वाही जी का निधन

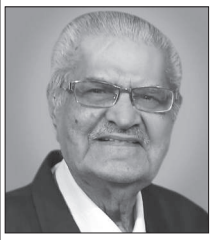

आर्य समाज एल. ब्लाक हरीनगर के संथापक, सदस्य एवं पूर्व प्रधान श्री सूरज प्रकाश वाही जी का 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्य समाज एल. ब्लाक हरीनगर के सेवाभावी स्तम्भ थे उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। जिसमें एल. ब्लाक आर्य समाज के अधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

### श्री सत्यदेव वुनिमोली जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के सदस्य, स्वामी श्रद्धानन्द मेमोरियल प्राथमिक विद्यालय के प्रबन्धक एवं वित्तीय समिति के सदस्य श्री सत्यदेव वुनिमोली जी का 3 जनवरी 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

### श्री भंवर लाल आर्य जी का निधन

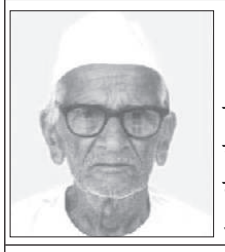

आर्य समाज भावी, जोधपुर के प्रधान एवं पूर्व सरपंच पण्डित लेखराम वैदिक मिशन के कार्यकर्ता श्री गौरव आर्य जी के पूज्य दादा जी श्री भंवर लाल आर्य जी का 99 वर्ष की अवस्था में 2 जनवरी 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम वैदिक रीति से संस्कार किया गया।

### श्रीमती फूलवती जी का निधन

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री गंगाशरन आर्य जी पूज्या माता श्रीमती फूलवती जी का 31 दिसम्बर 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार शाहबाद, मोहम्मद पुर के शमशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक**

सोमवार 02 जनवरी, 2023 से रविवार 08 जनवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 04-05-06 जनवरी, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 04 जनवरी, 2023

पृष्ठ 1 का शेष

# आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से की भेंट

7 लोक कल्याण मार्ग, नई दिल्ली में अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुई।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने प्रधानमंत्री जी की पूज्या माता हीरा बा जी के निधन पर समस्त आर्य जगत की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की और प्रधानमंत्री जी के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करते हुए कहा कि इतनी बड़ी व्यक्तिगत हानि के पश्चात भी आपने हमें अपना कीमती समय प्रदान किया इसके लिए हम आपके आभारी हैं। प्रतिनिधि मंडल की ओर से आर्य समाज के सेवा कार्यों की विस्तृत चर्चा करते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा भारत राष्ट्र के निर्माण में किये गए ऐतिहासिक कार्यों की प्रशन्सा करते हुए कहा गया कि आपने आत्म निर्भर भारत, स्वदेशी मेक इन इण्डिया, धारा 370 और 35ए. को हटाने जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाकर यह सिद्ध कर दिया है कि आपकी संकल्प शक्ति अदभुत और अनुपम है। आपके नेतृत्व में ही अयोध्या में राम मन्दिर का भव्य निर्माण सम्भव हुआ है। सबका साथ सबका विकास के नारे को साकार करते हुए आपने तीन तलाक जैसी बुराई को समाज से दूर किया है। आप भारत के हर नागरिक के प्रति समान भाव से कल्याण का विचार करते हैं। अपका व्यक्तित्व और कृतित्व संपूर्ण मानव जाति के उदाहरण है। प्रतिनिधि मंडल द्वारा प्रधानमंत्री जी को बताया गया कि महर्षि दयानन्द की प्रेरणा के अनुसार आर्य समाज राष्ट्र एवं मानव सेवा के लिए निरंतर प्रयासरत है। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य ही संसार का उपकार करना है।

माननीय प्रधानमंत्री जी से महर्षि दयानन्द जी की 200 वीं जयन्ती एवं आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस को लेकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वृहद आयोजनों के लिए प्रतिनिधि मंडल ने मार्गदर्शन प्रदान करने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री जी ने सारे वृतांत को ध्यान पूर्वक सुना और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा की। आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के बहुमूल्य समय प्रदान करने के लिए कृतज्ञता व्यक्त की।

प्रतिष्ठा में,

## मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रिवार्षिक निर्वाचन संपन्न

### श्री प्रकाश आर्य -प्रधान, श्री अतुल वर्मा -महामंत्री, श्री श्रीधर शर्मा जी -कोषाध्यक्ष निर्वाचित

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रिवार्षिक निर्वाचन दिनांक 18 दिसम्बर 2022 को आर्य समाज पिपलानी, भोपाल में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री प्रकाश आर्य जी को प्रधान, श्री अतुल वर्मा जी को महामंत्री एवं श्री श्रीधर शर्मा जी को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

श्री प्रकाश आर्य
प्रधान

श्री अतुल वर्मा
महामंत्री

श्री श्रीधर शर्मा जी
कोषाध्यक्ष

ओ३म्
भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 | मुद्रित मूल्य ₹60 | प्रचारार्थ ₹40 | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 | ₹100 | ₹60 | |
| पॉकेट संस्करण | ₹80 | ₹50 | |
| विशिष्ट पॉकेट संस्करण | ₹150 | ₹100 | |
| स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 | ₹150 | ₹100 | |
| उपहार संस्करण | ₹1100 | ₹750 | |
| सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द | ₹200 | ₹130 | |
| सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द | ₹250 | ₹170 | |

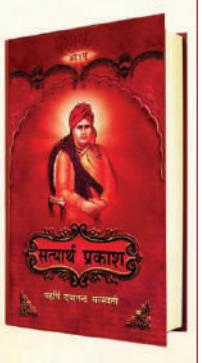


कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह